श्रीवीतरागाय नमः

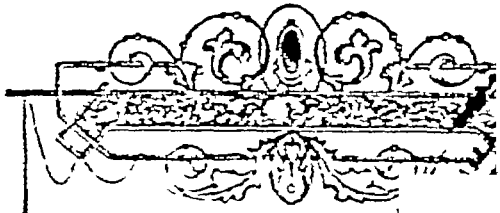

जीव और कर्म विचार

सत्य अनादिसे है तो मिथ्या भी अनादिसे ही है। जहाँ दिवसका साम्राज्य है वहां पर रात्रि होती ही है। मित्र और शत्रु की सहचरता प्रसिद्ध ही है। —ठीक इसी प्रकार अनुकूलता प्रतिकूलता सर्वत्र अनादि कालसे हो रही है।

संसारमें सम्यक्त्व अनादि कालसे है तो साथमें यह भी मानना पड़ेगा कि मिथ्यात्व भी अनादि कालसे है। जैनधर्म अनादिनिधन है तो मिथ्यात्व भी अनादिनिधन है।

मिथ्यात्व दो प्रकार हैं। द्रव्य मिथ्यात्व और भाव मिथ्यात्व। भाव मिथ्यात्व को अगृहीत मिथ्यात्व या अज्ञान मिथ्यात्व कहते हैं। द्रव्य-मिथ्यात्वके अनंत भेद हैं तो भी समस्त मिथ्यात्वोंका अंतर्भाव पांच भेदोंमें हो जाता है।

संसारमें जितने मत-मतांतर दीख रहे हैं। जो नष्ट हो चुके हैं अथवा इससे भी अधिक भविष्यमें प्रादुर्भाव होंगे उनमेंसे दि० जैन मत को छोड़कर बाकी सब मत (धर्म) द्रव्य-मिथ्यात्व हैं।